Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

# समकालीन कहानी की वर्तमान दिशाएँ (विमर्श)

**डॉ0 अनिल कुमार शर्मा**
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, चौ0 शिवनाथ सिंह शाण्डिल्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माछरा,मेरठ, उत्तर प्रदेश।

**Article Info**
Volume 2 Issue 3
Page Number : 130-134

**Publication Issue :**
May-June-2019

**Article History**
Accepted : 20 June 2019
Published : 30 June 2019

**सारांश**–पिछले 10–12 वर्षो की हिन्दी कहानी की प्रगाति के ग्राफ को देख यह कहा जा सकता है कि आज उसकी उन्नति और समृद्धि के शिखर बहुत ऊपर उठान की ओर है। कहानी की परिवर्तित संवेदना ने कथ्य और शिल्प के बने–बनाये खाँचे को पूरी तरह तोड़ दिया है। पिछले कुछ वर्षो में शिल्प में नयी–नयी युक्तियाँ तलाशने के प्रयत्नों को बल दिया। आज कहानी से पाठकीय अपेक्षाएँ बदल रही है, अपने इसी चरित्र के चलते कहानी गंभीर बौद्धिक विमर्श की विद्या मानी जाने लगी है। यह गंभीर बौद्धिक विमर्श इसलिए जरुरी हुआ क्योंकि भूमंडलीकरण के दौरान 'ग्लोबल विलेज' को परिकल्पना ने मुक्त सरीखा नहीं हैयह आकमण ही कहानी की सबसे बड़ी चिन्ता है इसने कहानी के रहन और कहन दोनों को बदल दिया है। अपने इस समय से जूझती कहानी कभी फंतासी, कभी जादुई यथार्थ, कभी आत्मकथा, कभी संस्मरण, कभी रिपोर्ताज, कभी व्यंग्य आदि–आदि युक्तियों को सहारा लेती है। कहानी के इस नए कला रूप को पढने की हमें एक नई समझ नई सूझ–बूझ विकसित करनी होगी। यह जानना भी जरुरी है कि वर्तमान में कौन से सांस्कृतिक संकट और परिवेश के सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन है जो रचनाकार के मानस पर अपना बनाते है जिनसे वह लगातार अपनी सर्जना में जूझ रहा है, कई कहानीकारों ने अपनी अपनी दृष्टि से इसी विषय को कथ्य बनाया। कहानियाँ मायावी संसार के तिलस्म की पोल खोलती हैं तथा सामान्य व्यक्ति के जीवन में आये बदलाव को रेखांकित करती है। आरक्षण के मुद्दे से जुड़ी समस्या, दलित और स्त्री के अधिकारों के प्रश्न आदि। विमर्श कहानी का केन्द्रीय बिन्दु बनने से कहानी का विधागत पारम्परिक ढांचा न लेकर आकार में अपितु अन्य रूपों में भी टूटा या पुनसृर्जित हुआ है। जादुई यथार्थ, फंतासी यथार्थ के विकृत रूप को चित्रित करने के लिए अनिवार्यतः रचना में आने लगे है। व्यंग्य पूरी कहानी में फैला दिखाई देता है। व्यंग्य स्वतन्त्र विद्या के रूप दिखाई देता है। कहानी अपने बहु आयामी सन्दर्भो में साहित्य की दुनिया की भी चर्चा करती है। नामवर सिंह, श्रीकांत वर्मा, रघुवीर सहाय अशोक बाजपेयी आदि की चर्चा भी होती है। विमर्श को प्रधानता देते हुए स्वयं प्रकाश, संजीव, अखिलेश, हरिभटनागर, हरिचरन प्रकाश, शंशाक आदि ने बहुत से नये प्रयोग कहानी के शिल्प में किए है। आज हिन्दी कथा में आत्म स्व की उपस्थिति नए रुप में हो रही है। आज कहानी रिपोर्ताज के तत्वों और संस्कारों को भी आत्मसात कर रही है। औद्योगिकरण

**Copyright :** © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

कस्बों, बस्तियों और पारंपरिक रहन के जिन जीवन मूल्यों को लील रहा है, उस पर कहानी का विमर्श गहरी चिन्ता व्यक्त करता है। कहानी की भाषा को अन्य लोग भी अपनी–अपनी तरह से नया रूप दे रहे है। शब्दों की लय पूर्ण आवृत्ति कितना कुछ कह देती है यह गद्य को अपने ढंग से रचने का एक उदाहरण है। अपने परिवेश और परिस्थितियों से भाषा किस प्रकार प्रभावित हुई है। इसके अनेक उदाहरण कहानियों में देखे जा सकते है। नई तकनीकी उपलब्धियाँ व्यापारिक शब्दावली, व्यावसायिक प्रसंगों के शब्दों का नया अर्थ– समीकरण आदि हमारी कहानी भाषा को अपनी संवेदना दे रहे है। 'हिग्लिश तो अब बहुत–सी कहानियों में पात्रों की बातचीत का अंग बनती ही है।
**मुख्य शब्द**– समकालीन, कहानी, वर्तमान, दिशा, बौद्धिक, व्यापारिक शब्दावली

पिछले 10–12 वर्षो की हिन्दी कहानी की प्रगाति के ग्राफ को देख यह कहा जा सकता है कि आज उसकी उन्नति और समृद्धि के शिखर बहुत ऊपर उठान की ओर है। कहानी की परिवर्तित संवेदना ने कथ्य और शिल्प के बने–बनाये खाँचे को पूरी तरह तोड़ दिया है। कहानी के बदले दिक्–काल ने उसके रूप (शास्त्र) को पूरी तरह बदल दिया है। किसी रचना की अन्तर्वस्तु ही उसके वाह्य रुप का स्वरुप बनाती है। पिछले कुछ वर्षो में शिल्प में नयी–नयी युक्तियाँ तलाशने के प्रयत्नों को बल दिया।

आज कहानी से पाठकीय अपेक्षाएँ बदल रही है, कुछ समय पहले कहानी में भोगे हुए यथार्थ, यथार्थ से साक्षात्कार जीवन समान्तर चलने की प्रतिबद्धता या आर्थिक मुहाने पर लड़ी जाने वाली लड़ाई की पुरजोर कोशिश के बीच कहानी–पन की माँग कर रहे थे तो आज हम उसे विकराल और बीहड़ समय मे गंभीर रुप से सार्थक हस्तक्षेप करने वाला सशक्त साहित्य रुप, कला रूप मानते। अपने इसी चरित्र के चलते कहानी गंभीर बौद्धिक विमर्श की विद्या मानी जाने लगी है। इससे कहानी की लोकप्रियता और जनप्रियता बाधित हुई है। इस कहानी ने अपना एक पाठक वर्ग तैयार किया है। यह गंभीर बौद्धिक विमर्श इसलिए जरुरी हुआ क्योंकि भूमंडलीकरण के दौरान 'ग्लोबल विलेज' को परिकल्पना ने मुक्त बाजार और उपभोक्ता वादी संस्कृति को बढ़ावा दिया, हम अपसंस्कृति के हमले से घबरा उठे अपने श्रेष्ठ मूल्यों की रक्षा के प्रयत्न शब्दों में तलाशने लगे। प्रत्येक शब्द कर्मी इस अंधड़ से बचने के उपाय खोज रहा है। यह अलग है कि उसे कितनी सफलता मिलती है महत्वपूर्ण यह है कि वह इससे बचने की जुगत खोज रहा है। इसी से कहानी विमर्शधर्मा बनती है। अपसंस्कृति का यह आक्रमण अंधड़ सरीखा नहीं है यह तो धीरे–धीरे अपने डैने को और अधिक फैलता चला जा रहा है। यह आकमण ही कहानी की सबसे बड़ी चिन्ता है इसने कहानी के रहन और कहन दोनों को बदल दिया है।

अपने इस समय से जूझती कहानी कभी फंतासी, कभी जादुई यथार्थ, कभी आत्मकथा, कभी संस्मरण, कभी रिपोर्ताज, कभी व्यंग्य आदि–आदि युक्तियों को सहारा लेती है। यह कहानी का विरुपीकरण नहीं है बल्कि विद्या के लिए बनी चौहद्दियों को पारकर वह उसे ऐसे स्थान पर ला खड़ा करती है जहाँ से वह अपने वर्तमान को खंगाल कर आगे की सार्थक दिशा तय कर सके। कहानी के इस नए कला रूप को पढने की हमें एक नई समझ नई सूझ–बूझ विकसित करनी होगी।

संक्षेप में यह जानना भी जरुरी है कि वर्तमान में कौन से सांस्कृतिक संकट और परिवेश के सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन है जो रचनाकार के मानस पर अपना बनाते है जिनसे वह लगातार अपनी सर्जना में जूझ रहा है, सर्वाधिक चिन्ता है सौन्दर्य प्रतियोगिताओं की भरमार सौन्दर्य बाजार को बढ़ावा देने का कारोबार बड़ी–बड़ी कम्पनियों का

लाभ कमाना और इसका प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर पड़ना। कई कहानीकारों ने अपनी अपनी दृष्टि से इसी विषय को कथ्य बनाया। नये–नये शिल्पों में ढल कर सुचिंतित रूप से उठाया। काउंट डाउन (संजीव) पीली छतरी वाली लड़की (उदय प्रकाश) चीयर अप कोला ब्लूम (जय – नंदन) ड्रैक्यूला (अमरीक सिंह) आदि की कहानियाँ सौन्दर्य प्रतियोगिता के मायावी संसार के तिलिस्म की पोल खोलती है और सामान्य व्यक्ति की जिंदगी में आये बदलाव को रेखांकित करती हैं राजनीति का भ्रष्टाचार, अपराधीकरण, कदाचरण, देश में योग्यता और प्रतिभा की दारुण अवमानना, आरक्षण के मुद्दे से जुड़ी समस्या, दलित और स्त्री के अधिकारो के प्रश्न टी०वी० अपसंस्कृति का पसारा उपभोक्ता की नई दौड़ विभिन्न प्रतियोगिता आदि ने कहानी में विचारोत्तेजक बहस और टिप्पणियों के अन्तर्भूत करने की अनिवार्यता दी जिस कारण कहानी की आकार गत सीमाएँ टूटी। कहानी में विमर्श की इस अनिवार्यता ने उसका एक आयमी चरित्र एक ही बैठक में पढ़ी जाने वाली रचना, तीव्र प्रभावान्विती जैसी पारम्परिक मान्यताओं को समाप्त कर दिया। कुछ पत्रिकाओं ने लम्बी कहानी को प्रस्थापित करने का प्रयत्न पहले ही शुरु कर दिया था। कृष्णा सोबती की ऐ लड़की, उदय प्रकाश की पीली छतरी वाली लड़की, कमलेश्वर की तुम्हारा शरीर मुझे पाप के लिए पुकारता है आदि कहानियाँ लम्बी और बहुआयामी हो गई है, इन्होंने कहानी के पारम्पारिक ढाँचें और चरित्र को पूरी तरह तोड़ दिया है इसी कारण कुछ कहानी लम्बी कहानी या लघु उपन्यास भी कही गई जैसे मित्रों मरजानी कृष्ण सोबती एक पति के नोट्स महेन्द्र भल्ला, त्रिशूल – शिवमूर्ति आदि विमर्श कहानी का केन्द्रीय बिन्दु बनने से कहानी का विधागत पारम्परिक ढांचा न लेकर आकार में अपितु अन्य रूपों में भी टूटा या पुनसृर्जित हुआ है। जादुई यथार्थ, फंतासी यथार्थ के विकृत रूप को चित्रित करने के लिए अनिवार्यतरू रचना में आने लगे है। व्यंग्य पूरी कहानी में फैला दिखाई देता है। व्यंग्य स्वतन्त्र विद्या के रूप दिखाई देता है। पर यह व्यंग्य हरिशंकर परसाई, शरदजोशी के व्यंग्य से अलग हटकर कहानी को किस प्रकार शोषित करता है, यह हाय दिल्ली उर्फ दिल्ली– सिके की वाह! मनोहर श्याम जोशी की कहानी में दिखता है। कहानी पत्रकारिता और टी०वी० जगत की पूरी पोल खोलती हुई अन्तर्वस्तु और भाषा शैली कहानी की पूरी कहन में शब्द प्रति शब्द में, व्यंग्य का ऐसा कुशल प्रयोग करती है कि कहानी की मारक क्षमता पूरी व्यवस्था को पर्त दर पर्त छीलती चलती है। पीली छतरी वाली लड़की में व्यंग्य का इस्तेमाल सशक्त रुप में हुआ है। जादुई यथार्थ का प्रयोग करते हुए उदय प्रकाश वारेन हेस्टिंग्स का सांड को एक अविस्मरणीय कहानी का रूप देते है। इसमें इतिहास की अर्न्तव्याप्ति अपने ही ढंग की है। इतिहास, परम्परा, जनश्रुति आदि का प्रयोग कर वारेन हेस्टिग्स का सांड का रचनाकार अपनी एक इतिहास दृष्टि प्रस्तुत कर अंग्रेजो की साम्राज्य–वादी नीति और इस देश की परम्परा, संस्कृति जातीय – संस्कृति आदि को नष्ट करने की उनकी साजिश को गहरी अर्न्तदृष्टि से प्रस्तुत करता है। ऐसे ही कमलेश्वर की कहानी तुम्हारा शरीर मुझे पाप के लिए पुकारता है, में शीर्षक तो चौकांने वाला है ही इसका कथ्य देह, 'शरीर' से पूरी तरह अलग अपने वक्त की पड़ताल करता है और पाठक को आश्चर्य देता है कि कहानी क्या इस सिम्त से भी लिखी जा सकती है। अपने बल को अभिव्यक्ति देता लेखक शिल्प की तलाश में यह कहने के लिए विवश होता है कि ऐसे बेमकसद वक्त में क्या किया जाए? शायद कहानी टूटेगी और वक्त को तोड़गी, तभी वक्त भी टूटेगा। कहानी का टूटना ही उसकी रचना है।' यह कहानी प्रशासन तंत्र की उच्चतम श्रेणी –चीफ सेक्रेटरी, सेक्रेटरी, एडीशनल ज्वांइट सेक्रेटरी आदि की सांध्य पार्टियों में हो रही सत्ता की राजनीति की खबर तो लेती ही है, प्रशासन में आतंकवादी संगठनों के दबाव के तहत लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों में आतंकवादियों की निर्णायक क्षमता का भी परिचय देती है। कहानी अपने बहु आयामी सन्दर्भों में साहित्य की दुनिया की भी चर्चा करती है। नामवर सिंह, श्रीकांत वर्मा, रघुवीर सहाय अशोक बाजपेयी आदि की चर्चा भी होती है। यह कहानी अपनी मारक क्षमता के कई मुहानों पर खड़ी है। यह कहानी के दृष्टि क्षितिज का विस्तार है। इसी विमर्श को प्रधानता देते हुए स्वयं प्रकाश, संजीव,

अखिलेश, हरिभटनागर, हरिचरन प्रकाश, शंशाक आदि ने बहुत से नये प्रयोग कहानी के शिल्प में किए है। कहतें है कि हर रचना का सम्बन्ध स्वानुभूति से है या आत्मकथात्मक अंक है। आज हिन्दी कथा में आत्म स्व की उपस्थिति नए रुप में हो रही है। काशी नाथ की रचना काशी का अस्सी में इस आत्मा की उपस्थिति अभिनव रुप में दुनिया जहान की खबर लेने के लिए है। संजीव की कहानी 'डेढ़ सौ सालों की तन्हाई में आत्म की अभिव्यक्ति इतने मुखर रुप में है कि वह कहानी कम इंग्लैण्ड प्रवास का संस्मरण अधिक लगती है। इनसे हटकर स्वदेश दीपक की कथा सीरीज, खंडित जीवन का कोलाज कथा देश में मैने मांडू नही देखा, क्या मै आपकों जानता हूँ औरत एक जादू होती है, घूमते अंधेरे –सा पतझड तथा हंस में प्रकाशित कहानी गन्नेवाला आदि कहानियों में आत्मा एक अलग रूप में अपने आपकों उद्घाटित करता है। स्वदेश दीपक साठ–आठ वर्ष तक मनोरोगी रहे इसी बीमारी के मूल में जिस मायाविनी नगरी का सम्मोहन रूप और व्यवहार रहा तथा जो यंत्रणामय स्थितियाँ झेली, उन सभी की अत्यन्त मार्मिक कलापूर्ण अभिव्यक्ति इस रूप में हुई कि यह कहानी भी है, आत्मकथात्मक अंश भी।

आज कहानी रिपोर्ताज के तत्वों और संस्कारों को भी आत्मसात कर रही है। इसी प्रकार की कहानी हैं स्वयं प्रकाश की ताजा खबर। इसमें सोम काका जैसे नेता के चुनाव हार जाने की खबर रिपोर्ताज शैली में देकर कहानी में यूँ प्रविष्टि लेते है लेकिन रुकिये। पहेली जैसी न हो जाए, इसलिए कहानी शुरु से ही सुनाना ठीक रहेगा। इसके अतिरिक्त ऐसा प्रारम्भ तो अनेक कहानियों में मिल जायेगा जिनमें कहानी कार पाठक से कहता है कि 'घटना है तो सच्ची भले ही आप इसे कहानी मान ले' या कभी कहता है 'मैं कहानी सुना रहा हूँ आमुक की चाहें तो इसे आप अपनी मान ले।' 'स्वयं प्रकाश 'ताजा खबर' में बहुत बारीकी से औद्योगीकरण और प्रशासन–तंत्र से जुड़े बहुत से सवालों पर सहज शैली में गंभीर विमर्श रचते है। औद्योगिकरण कस्बों, बस्तियों और पारंपरिक रहन के जिन जीवन मूल्यों को लील रहा है, उस पर कहानी का विमर्श गहरी चिन्ता व्यक्त करता है। यो स्वयंप्रकाश अपनी अन्य कहानियों में भी गद्य की सरल बुनावट में गंभीर बात कहने की अपनी विशिष्ट शैली के लिए आकर्षित करते हैं किन्तु यहाँ उन्होंने भाषा को एक नयी रवानगी शब्दों वाक्याशों की पुनरुक्ति से दी है। इसी प्रकार कहानी की भाषा को अन्य लोग भी अपनी–अपनी तरह से नया रूप दे रहे है। शब्दों की लय पूर्ण आवृत्ति कितना कुछ कह देती है यह गद्य को अपने ढंग से रचने का एक उदाहरण है। अपने परिवेश और परिस्थितियों से भाषा किस प्रकार प्रभावित हुई है। इसके अनेक उदाहरण कहानियों में देखे जा सकते है। नई तकनीकी उपलब्धियाँ व्यापारिक शब्दावली, व्यावसायिक प्रसंगों के शब्दों का नया अर्थ– समीकरण आदि हमारी कहानी भाषा को अपनी संवेदना दे रहे है। मनोहर श्याम जोशी की कहानी हलाल टी०वी० पत्रकारिता के अनेक प्रसंगों को भाषा अपने में उतारती है। 'हिग्लिश तो अब बहुत–सी कहानियों में पात्रों की बातचीत का अंग बनती ही है। संजीव की कहानी के प्रारम्भ में इतनी अधिक शैलियाँ देखी जा सकती है कि उनमें एक अलग ताजगी आकर्षण है। कभी लेखक कहानी में अपना मंतव्य दृष्टिकोण प्रकट करने के लिए प्रारम्भ में ही अपनी टिप्पणी देकर उसका खुलासा करता है। कभी प्रसंग में किसी दूसरे प्रसिद्ध लेखक, चिंतक, अथशास्त्री आदि की टिप्पणी उद्धत करता है। उदय प्रकाश की रचना – वारेन हेस्टिग्स का सांड में कहानी का प्रसंग इस रूप में दिखाई देता है इमारत की फोटो प्रति का चित्र आदि नवीन कथा युक्तियों का प्रयोग अपने मंतव्य तक पहुँचने के लिए किया जाता है। लक्ष्मेन्द्र चौपडा की कहानी आखिरी पंक्ति में कारीगर में कहानी का प्रारम्भ अमर्त्य सेन की टिप्पणी से किया गया है। इसके माध्यम से कहानी कार अपने सरोकारों को स्पष्ट करता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | कहानी आन्दोलन की भूमिका | – | डा० बलराज पाण्डेय |
| 2. | नयी कहानी की पूर्व पीठिका | – | रामाश्रय सविता |
| 3. | नयी कहानी सन्दर्भ और प्रकृति | – | डा० देवीशंकर अवस्थी |
| 4. | कहानीः नयी कहानी | – | डा० नामवर सिंह |
| 5. | दलित कहानी संचयन | – | साहित्य अकादमी |
| 6. | कथा सीरीज | – | स्वदेश दीपक |
| 7. | सन्दर्भित कहानी | – | 90 के दशक से |


## पत्र पत्रिकाएँ


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | हंस | – | राजेन्द्र यादव |
| 2. | वर्तमान साहित्य | – | कहानी विशेषांक 1998 |
| 3. | कथादेश | – | 2001–2003 |
| 4. | अक्षरा | – | विजय कुमार देव |
| 6. | पक्षधर | – | विनोद तिवारी |
| 7. | मित्र | – | मिथिलेश्वर |
| 8. | आजकल | – | योगेन्द्र दत्त शर्मा |